अध्यक्ष डिएटर एफ. उक्टोफ द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार

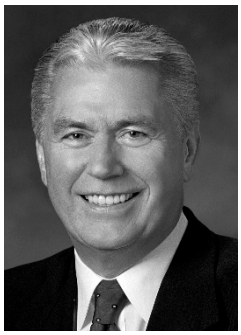

परमेश्वर का वचन उसके बच्चों के लिए

धर्मशास्त्र हमें बताता है कि पहला काम परमेश्वर ने आदमी और औरत की रचना करने के बाद उनसे बात की थी। [1] उनके पास उन्हें देने के लिये आवश्यक जानकारीयां और बहुमुल्य निर्देशन थें । उनका उदेश्य उन्हें बोझ या परेशान करने का नहीं था अपितु उन्हें आनन्द और अनंत महिमा की ओर मार्गदर्शन देने का था ।

और वह तो सिर्फ आरम्भ था । उस दिन से आजतक, परमेश्वर लगातार अपने बच्चों के साथ वार्तालाप करते रहते हैं । उसके शब्द सुरक्षित, संभाले हैं, और हर वंश के शिष्यों द्वारा अध्ययन किए जाते हैं । इनका श्रद्धेय उनके द्वारा जो परमेश्वर की इच्छा को खोजना जानते हैं, और वे सच्चाई की गवाही देते हैं कि " प्रभु परमेश्वर कुछ नहीं करेंगे, परन्तु वह अपना रहस्य अपने सेवकों भविष्यवक्ताओं पर प्रकट करते हैं ।" [2]

यही तरीका प्रारम्भ के समय से रहा है, और आज भी लगातार वही तरीका है । यह सिर्फ बाईबल की अच्छी कहानी नहीं है ; यह परमेश्वर के आवश्यक रास्ते बनाएं गए अपने बच्चों से विशेष संदेश से बातचीत करने के लिए हैं । उसने हमारे बीच से हर एक को बड़ाया, उन्हें भविष्यवक्ता बुलाया, और उन्हें शब्द दिये बोलने के लिए, जिन्हें हम "जैसे यदि वह स्वंय [उनके] मुख से प्राप्त करने के लिये" आंमत्रित करते हैं । [3] वह घोषणा करता है, "चाहे मेरे स्वयं के स्वरों द्वारा या मेरे सेवकों के वाणी द्वारा, यह सामान है ।" [4]

यह पुनस्थापना का संदेश एक अति महीमापुर्ण, से भरपुर, और आशा का संदेश है–परमेश्वर चुप नहीं है! वह अपने बच्चों से प्रेम करता है। वह हमें अंधकार में भटकने के लिये नहीं छोड़ता है।

प्रत्येक साल में दो बार, अप्रैल और अक्टूबर में, हम को प्रभु के वचन सुनने के अवसर उसके सेवकों द्वारा हमारे अद्भूत महा सम्मेलन में मिलते हैं।

मैं आपको मेरी व्यक्तिगत गवाही देता हूं कि वार्ताकार महासम्मेलन के मंज की ओर लम्बी चहेलकदमी करते हैं, वह विशाल प्रयत्न करते, प्रार्थना करते, और बोलने के कार्य के जवाब में लग जाते हैं । हर सम्मेलन संदेश को तैयार करने में अनगिनत घण्टें और हृदयपूर्ण अनुग्रह को समझने में लग जाते हैं प्रभु की इच्छा क्या है उनके संतों को सुनने के लिए ।

क्या हो सकता है यदि हम सुनने वालो के रुप में वार्ताकार की तैयारी हमारे खुद से मेल खाते हो ? कैसे हमारी याचना महा सम्मेलन से भिन्न हो सकती है यदि हम सम्मेलन को स्वयं प्रभु के संदेशों को प्राप्त करने के अवसर के रुप में देखते हैं ? महा सम्मेलन के शब्दों और संगीत के द्वारा, हम व्यक्तिगत जवाबों को पाने की कामना कर सकते हैं चाहे कोई भी प्रश्न या समस्यो का सामना कर रहे हो ।

अगर आप कभी चकित हुए हो कि कहीं स्वर्गीय पिता सच में आप से बात करेगा, मैं आपको स्मरण करना चाहुंगा सरल पर गहन शब्दों में जिसे हमारे प्राथामिक के बच्चों ने गाया था: " आप परमेश्वर के बच्चे हो, और उसने आप को यहां भेजा है ।" उसका उदेश्य आपकी सहायता करने के लिए है ताकि आप वापस आएं "किसी दिन उसके साथ जीने के लिए ।"

यदि आप स्वर्गीय पिता से पेशकश करे उसके बच्चे के रुप में, आप सच्चे मन से उससे पूछ सकते है, "Lead me, guide me, walk beside me, help me find the way. Teach me all that I must do." वह उसकी पवित्र आत्मा के द्वारा आपसे बात करेगा, और तब यह आप पर है "उसकी इच्छानुसार करना ।" मैं वादा करता हूं कि अगर आप यह करते हैं, "महान आशीषें कोश में रखी होंगी ।" [5]

प्रभु का मार्गदर्शन आज भी जरुरत है जितनी की संसार के इतिहास में रही थी । जैसे हम प्रभु के वचनों को सुनने के लिए तैयार हैं, हमें महेनत से सच्चाई की आत्मा को खोजना है ताकि जब प्रभु उसके सेवकों द्वारा बात करें, हम समझ सकें, उन्नति करें, और एक साथ आनंदित हो सकते हैं। [6]

मैं उसकी गवाही देता हूं "इन कामों को करने से अधोलोक के

फाटक उस पर प्रबल न होंगे; हां, और प्रभु परमेश्वर हमारे सामने से अन्धकार की शक्तियों को हटाने में व्यस्त होगा, और हमारी अच्छाई के कारण स्वर्ग को हिलाएगा, और उसके नाम की महिमा होगी ।" [7]

टिपण्णीयां

1. देखें उत्पति 1:28.
2. अमोस 3:7.
3. सिद्धान्त और अनुबंद 21:5.
4. सिद्धान्त और अनुबंद 1:38.
5. "I Am a Child of God," स्तुतिगीत म.301; बच्चों की गीत की किताब 2–3.
6. देखें सिद्धान्त और अनुबंद 50:21–22.
7. सिद्धान्त और अनुबंद 21:6.

इन संदेशों से शिक्षा देना

महा सम्मेलन के दौरान हमें हमारे निजी प्रश्नों और समस्यों के उत्तर मिल सकते हैं जैसे हम परमेश्वर के नियुक्त सेवकों को सुनते हैं । विचार करें निम्न पर चर्चा कर जिस को आप शिक्षा देते हैं: आप कैसे महा सम्मेलन के दौरान उन जवाबों को प्राप्त करने के लिये तैयार हो सकते हैं ? अध्यक्ष उक्टोफ हमें प्रोत्सहित करते हैं महेनत से सच्चाई की आत्मा को खोजें । इसका मतलब क्या है आप क्या सोचते हैं, और कैसे आप अपनी तैयारी को इन के साथ जोड़ते हैं ? अतिरिक्त में आशीषें बताई गई हैं । सिद्धान्त और अनुबंद 21:16 ,और अन्य कौन सी आशीषें प्रभु के वचनों को उनके सेवकों द्वारा सुनने की तैयार करने से आती हैं ? आप जिनको सीखाते हैं आंमत्रित कर सकते हैं एक लेखिका में लिखने के लिये जो भी आत्मा उन्हें इस महा सम्मेलन में सीखाती हैं ।

युवा

परमेश्वर की वाणी सुनने के लिये तैयारी करना

अध्यक्ष उक्टोफ बताते हैं परमेश्वर ने आदमी और औरत की रचना करने के बाद कैसे पहला काम उन से बात करके और उन्हें अनमोल जानकारी और निर्देशन दी थी । हम उन में से कुछ आशीषें अप्रैल और अक्टूबर में महा सममेलन के दौरान पाते हैं, जब गिरजा के मार्गदर्शक हमें संदेश देते हैं और हमें सलाह देते हैं प्रभु चाहता है कि हम सुनें ।

क्या कभी आपने परमेश्वर की आवाज को उसके सेवकों द्वारा महा सम्मेलन में सुनी है? क्या कभी आपने महसूस किया जैसे कि एक विशेष संदेश आपका उत्तर था आप जिसे ढुढ़ रहें थें? एक दैनिक में, उस अनुभूति को और कैसे उस ने आपकी सहायता की आप लिख सकते है । तब प्रभु की आवाज को सुनने की तैयारी करें इस आनेवाले सम्मेलन की आप के पास के प्रश्नों को लिखने के द्वारा और अपने धर्मशास्त्रो का अध्ययन करने के दौरान । स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करें, जवाब पाने के लिये और सम्मेलन के दौरान अन्तर्दृष्टि से पूछे। जैसे आप प्रभु के सेवकों को सुनते हैं, हर एक प्रोत्साहनों पर ध्यान दे। आपने क्या सीखा? आपको कैसी अनुभूति होती है बदलाव प्रेरणा से ? उन प्रोत्साहनों को लिखें क्योंकि वह आत्मा होता है आप से बात करता है!

हमेशा याद रखें कि स्वर्गीय पिता आपसे प्यार करते हैं और आपका सही दिशा में मार्गदर्शन करेंगे। जैसे आप उनके सेवकों के माध्यम से उनकी वाणी सुनने का प्रयास करेंगे, आप आशीषित और शिक्षित होंगे।

बच्चे

सम्मेलन के लिये तैयार रहें!

इन प्रोत्साहनओं को एक काज़ग पर लिखें । काज़ग को सम्मेलन के दौरान अपने साथ रखें ताकि आप लिख सकें आपने क्या सीखा ।

अपने प्रश्नों को लिख डाले । मैं इस के बारे में चकित हूं ...

स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करें । जैसे की मैं सहायता करने के बारे में सीखूंगा ...

महा सम्मेलन को सुनें । मैंने सीखा था ...

यह संदेश पहली अध्यक्षता के पुनर्गठन से पहले बनाया गया था।

© 2018 द्वारा Intellectual Reserve, Inc. सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अग्रेंजी अनुमतिः6/17 । अनुवाद अनुमतिः6/17 । First Presidency Message, March 2018. भाषा 15049 294

प्रत्येक बहन के लिए नाम से प्रार्थना करें

जब हम विशेषकर प्रत्येक बहनों के लिये नाम से प्रार्थना करते जिन से हम भेंट करते हैं, उन के लिये हमारा प्रेम और चिन्ता बड़ जाती है ।

विश्वास, परिवार, भरोसा

धर्मशास्त्र आदमी और औरत के बहुत से उदाहरण बांटता है जो दूसरों के लिये नाम से प्रार्थना करते हैं । अति नाटकिय तौर पर छोटे अलमा का पिता बीच में है । एक स्वर्गदूत छोटे अलमा से बात करता है, उसे कहते हुए कि "उसके पिता ने भारी विश्वास के साथ तुम्हारे संबंध में प्रार्थना की है ..., इसलिए परमेश्वर की शक्ति और अधिकार को तुम्हें विश्वास दिलाने के उदेश्य से मैं आया हूं कि उसके सेवकों की प्रार्थनाओं को उत्तर उनके विश्वास के अनुसार दिया जा सकता है" (मुसायाह 27:14).

एक दूसरें के लिए प्रार्थना करने से हमारे हृदय आशीषों के लिये खोल जाते हैं जिसे परमेश्वर हमें देने की इच्छा करता है । "प्रार्थना भी परमेश्वर की इच्छा को बदल नहीं सकती, अपितु हमारे स्वयं और दूसरों के लिये आशीषों के लिये सुरक्षित करती है जिसे परमेश्वर पहले से ही देने की कामना कर चुका होता है, लेकिन उसे हमें पाने के लिये क्रम से मागंना चाहिये ।" [1]

एक बहन बताती है कि उसके कठिन समय के दौरान, एक फोन कोल या सरल सा टेक्स संदेश उस की भेंट करने वाली शिक्षिका से अक्सर मिलता था "विशेषकारा अन्धकार के दिनों में" । जैसे वह जानती हो कब उसे उभरने की जरुरत होती है। वह जानती थी कि वह उस के लिये प्रार्थना करती है, दोनों बार भेंट करने के दौरान और वह स्वयं भी ।

"हमारी मिलती जुलती ताकत के बारे सोचे यदि हर बहन हर सुबह और रात ईमानदारी से प्रार्थना करें, अभी से, बिना रोके प्रार्थना करना जैसे प्रभु ने आज्ञा दी," सहायता संस्था की भूतपूर्व जनरल अध्यक्षा, जूली बी. बेक ने कहा था । 2

जिन से हम भेंट कर शिक्षा देते हैं व्यक्तिगत रुप और अन्तिम दिन संत महिलाओं के रुप में प्रार्थना कर हमें सर्मथ देता है ।

अध्यक्ष हेनरी बी. आयरिंग, प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार, ने कहाः "प्रार्थना इस तरह से करें की उन के मन जाना जाएं। ... आप को जानने की जरुरत होगी कि परमेश्वर आपकी सहायता के लिये क्या और सब कुछ करेगा, वैसे ही जैसे आप कर सकते हैं, परमेश्वर का प्रेम का एहसास उन के लिये कराता है ।" [3]

टिपण्णीयां

1. "प्रार्थना," धर्मशास्त्रों के गाईड से ।
2. जूली वी. बेक, "अन्तिम दिनों की बहने अच्छा क्या करती हैः अडिग और अटल बनी रहें," लियाहोना नव. 2007,110 ।
3. हेनरी बी. आयरिगं, "पौरहित्य और व्यक्तिगत प्रार्थना," लियाहोना मई 2015, 85 ।

इसे विचारे

क्या हाल ही की प्रेरणा और सुझाव आपको आए हैं जैसे आपने प्रत्येक बहनों के लिए प्रार्थना कर भेंट की ?

सेवाएं

प्रत्येक बहन के नाम से प्रार्थना करने से, हमें व्यक्तिगत प्रेरणा मिलेंगी जानने में हर बहन की जरुरत का जवाब में हमारी भेंट करने से कैसे करना है।

© 2018 by Intellectual Reserve, Inc सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अग्रेंजी अनुमतिः6/17 । अनुवाद अनुमतिः6/17 । *Visiting Teaching Principles, March 2018.* भाषा 15049 294